वार्षिक प्रार्थनाएं

— श्रीमां

वार्षिक प्रार्थनाएं

(१९३३—१९४५)

श्रीमां

अनुवादक और प्रकाशक:— चन्द्रदीप
श्रीअरविन्द-ग्रन्थमाला
१६ र्‍यू देबासैं द रिश्मों
पांडीचेरी

२४ नवम्बर १९४५

प्रथम संस्करण
१०००

मूल्य =)

श्रीअरविन्द आश्रम मुद्रणालय, पांडीचेरी

दो शब्द

इधर प्राय: १२-१३ वर्षोंसे श्रीमाताजी प्रत्येक नये वर्षके अवसरपर एक प्रार्थना देती आ रही हैं और उन्हींको यहां एकत्र कर दिया गया है। ये प्रार्थनाएं हमारी व्यक्तिगत साधनामें सहायता देनेके लिये तो लिखी ही गयी थीं, पर साथ ही ये 'प्राय: १२-१३ वर्षोंकी जागतिक घटनाओंके आध्यात्मिक विकासका इतिहास' भी हमें बताती हैं। हमारा विश्वास है कि सब प्रकारके आध्यात्मिक साधकोंको इन प्रार्थनाओंसे बराबर साधनामें सहायता मिलती रहेगी।

हिन्दी अनुवाद प्रधानतया मूल फ्रेंचसे ही किया गया है, पर अंग्रेजी अनुवादसे भी पर्याप्त सहायता ली गयी है।

—प्रकाशक

वार्षिक प्रार्थनाएं

१९३३

इस नये वर्षके जन्मके साथ-साथ हमारी चेतनाका भी नया जन्म हो ।

आओ, हम अपने भूतकालको बहुत दूर पीछे छोड़कर ज्योतिर्मय भविष्यकी ओर दौड़ चलें ।

१९३४

हे प्रभु ! वर्षका अन्त हो रहा है और हमारी कृतज्ञता तेरे सामने नत हो रही है ।

हे नाथ ! नये वर्षका जन्म हो रहा है और हमारी प्रार्थना तेरी ओर उठ रही है ।

ऐसी कृपा कर कि यह हमारे लिये भी एक नवीन जीवनका प्रभात सिद्ध हो ।

१९३५

हे प्रभु ! हमारे अन्दर जो कुछ कृत्रिम और मिथ्या है, जो कुछ छल-कपट और अनुकरण करनेवाला है, वह सब कुछ इस सन्ध्या-समय * हम तुझे समर्पित कर रहे हैं । वह सब कुछ इस समाप्त होनेवाले वर्षके साथ-साथ हमारे अन्दरसे एकदम जाता रहे । जो कुछ पूर्ण सत्य, सरल, ऋजु और शुद्ध है बस वही आरम्भ होनेवाले इस नये वर्षमें हमारे अन्दर बना रहे ।

---

* ३१ दिसम्बर १९३४ की शामको

१२३६

हे प्रभु ! यह वर्ष तेरी विजयका वर्ष हो। हम ऐसी पूर्ण अनुरक्तिके लिये अभीप्सा करते हैं जो हमें उस विजयके उपयुक्त बनावे।

१२३७

तेरी जय हो प्रभु ! तेरी जय हो सर्वविघ्न-विजेता ! ऐसी कृपा कर कि हमारे अन्दर कोई भी चीज तेरे कार्यमें बाधक न हो।

१९३८

हे प्रभु ! ऐसी कृपा कर कि हमारे अन्दरकी प्रत्येक चीज तेरी सिद्धिके लिये तैयार हो जाय। इस नये वर्षकी देहलीपर खड़े होकर हम तुझे नमस्कार कर रहे हैं हे प्रभु ! हे परमसिद्धिदाता !

१९३९

आध्यात्मिक शुद्धिका वर्ष होगा।

हे प्रभु ! भागवत कर्ममें भाग लेनेवाले सभी कार्यकर्त्ता तुझसे प्रार्थना करते हैं कि तू उन्हें पवित्रीकरणकी एक परम प्रक्रियाके द्वारा अहंकारके आधिपत्यसे एकदम मुक्त कर दे।

१९४०

नीरव और अन्तर्मुखी होनेका वर्ष........।

एकमात्र भगवत्कृपा ही हमारा आधार होगी।

१९४१

संसार अपने आध्यात्मिक जीवनकी रक्षा करनेके लिये युद्ध कर रहा है जिसे विरोधी और आसुरिक शक्तियोंके आक्रमणने सङ्कटमें डाल रखा है।

हे प्रभु! हम यह अभीप्सा करते हैं कि हम तेरे वीर योद्धा बनें जिसमें तेरी महिमा इस पृथ्वीपर प्रकट हो।

१९४२

तेरी जय हो प्रभु ! तेरी जय हो सर्वशत्रुविजेता !

हमें ऐसी शक्ति दे कि हम अन्ततक अचल-अटल बने रहें और तेरी विजयमें भाग ले सकें।

४ अप्रेल १९४२

हे प्रभु ! हमें अटूट साहस प्रदान कर, वह साहस प्रदान कर जो तेरे प्रति पूर्ण विश्वास होनेसे प्राप्त होता है।

१९४३ *

वह समय आ गया है जब हमें एक चुनाव—मूल्यग्राही और सुनिश्चित चुनाव करना ही होगा।

हे प्रभु! हमें ऐसी शक्ति दे कि हम मिथ्याका त्याग कर तेरे सत्यमें उठ जायं, विशुद्ध और तेरी विजयके उपयुक्त पात्र बनकर।

---

* यह कोई साधारण सिद्धान्तकी बात नहीं है, बल्कि यही वास्तव जगत्‌का तथ्य है। असुर (जो भगवान्‌का विरोध करनेवाली मिथ्याशक्ति है) आज भौतिक जगतमें अपना साम्राज्य फैलाये हुए है, उसका प्रभाव सर्वत्र, जड़ जगत्‌की एक-एक वस्तुमें स्पष्ट दिखायी दे

हे प्रभु ! समस्त मनुष्यजाति तुझसे प्रार्थना करती है कि तू इसे उन्हीं मूर्खताओंमें बार-बार जा पड़नेसे बचा ।

ऐसी कृपा कर कि जो भूलें पहचानी जा चुकी हैं, वे फिर नये सिरेसे दुहरायी न जायं ।

अन्तमें यह प्रदान कर कि मनुष्यजाति अपने घोषित आदर्शोंको ठीक-ठीक और सच्चे तौरपर कर्ममें प्रकट करे ।

रहा है । परन्तु अब वह समय आ गया है जब पृथक्करण, पवित्रीकरण हो सकता है, जब मिथ्या-का, असुरके प्रभावका त्याग कर एकमात्र भागवत सत्यमें पूर्णरूपेण निवास किया जा सकता है ।

१९४५

यह पृथ्वी तबतक सजीव और स्थायी शान्ति-का उपभोग नहीं कर सकती जबतक मनुष्य अपने अन्तर्राष्ट्रीय व्यवहारोंमें भी पूर्ण रूपसे सत्यपरायण होना नहीं सीख लेते ।

हे प्रभु ! हम इसी पूर्ण सत्यपरायणताकी अभीप्सा करते हैं ।

१६ अगस्त १९४५

हो गयी विजय, तेरी विजय, हे प्रभु, जिसके लिये हम तुझे अपनी हार्दिक कृतज्ञता निवेदन कर रहे हैं।

परन्तु अब हमारी तीव्र प्रार्थना तेरी ओर उठ रही है। वास्तवमें तेरी ही शक्तिसे, तेरी ही शक्तिके द्वारा विजेताओंने विजय पायी है। ऐसी कृपा कर कि वे अपनी सफलताकी अवस्थामें इस बातको भूल न जायं और उन्होंने दुःख-कष्ट और सङ्कटके समयमें तेरे सामने जो प्रतिज्ञाएं की हैं उनका वे पालन करें। उन्होंने युद्ध करनेके लिये तेरे नामकी दुहाई दी थी, अब वे शान्ति स्थापित करते समय तेरी कृपाको भूल न जायं।

परमाणु-बम

स्वयं अपने-आपमें 'परमाणु-बम' (Atomic Bomb) मनुष्यकी एक अद्भुत कृति है। यह साथ ही इस बातका प्रमाण भी है कि जड़ जगत्के ऊपर मनुष्यका अधिकार बहुत अधिक मात्रामें बढ़ गया है। परन्तु यह दुःखकी बात है कि जड़ जगत्के ऊपर इस तरह प्रभुत्व स्थापित करके मनुष्यको जो उन्नति हुई है वह उसकी चेतना और आध्यात्मिक जीवनकी एक वैसी ही उन्नतिके स्वाभाविक फलस्वरूप नहीं हुई है। परन्तु एकमात्र आध्यात्मिक चेतनामें ही ऐसी शक्ति है जो ऐसे आविष्कारोंके भयावह खतरों-

का सामना कर सके और उनके प्रभावों और परिणामोंको नष्ट कर सके । हम उन्नतिको रोक नहीं सकते, हमें रोकना चाहिये भी नहीं । पर हमें सावधानीके साथ आन्तर और बाह्य दोनों मार्गों-में एक उत्तरोत्तर वर्धमान सामञ्जस्य रखते हुए प्रगति करनी चाहिये ।

श्रीमां